वायु प्रदूषण को कम करने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाये जाते हैं। जल प्रदूषण को रोकने के लिए बड़ी-बड़ी परियोजनायें चलाई जा रही हैं। नदियों के किनारे से कारखाने हटाए जा रहे हैं। जैसे पर्यावरण दिवस और पर्यावरण सप्ताह मनाकर, अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर पर्यावरण को हरा-भरा बनाने का प्रयत्न किया जाता है इसी की तर्ज पर शुभ संकल्प सप्ताह भी मनाया जाये। हफ़्ते भर आपसी स्नेह, प्यार, भाईचारे, ईमानदारी, निष्ठा, त्याग जैसे गुणों से भरे संकल्प लोगों को अभ्यास के लिए दिये जाएँ।

आत्मा मूलत: ज्ञान, प्रेम, शांति, पवित्रता से युक्त है और परमात्मा इन सभी गुणों व शक्तियों के सागर हैं। जब हम स्वयं को आत्मा समझ कर परमात्मा को याद करने लगते हैं तो परमात्मा के सभी गुणों व शक्तियों का संचार आत्मा में होने लगता है और आत्मा भरपूरता का अनुभव करने लगती है। फिर इन गुणों व शक्तियों के शक्तिशाली प्रकंपन आत्मा से चहुँ ओर फैलने लगते हैं और प्रकृति सहित सभी पर इनका प्रभाव होने लगता है।

वैचारिक प्रदूषण को कम करने की दिशा में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहाँ सिखाये जाने वाले ज्ञान से व्यक्ति को स्वयं का, परमात्मा का, सृष्टि-चक्र का, कर्मों की गहन गति का ज्ञान हो जाता है। कोई भी परिस्थिति आने पर यह ज्ञान उसकी बहुत मदद करता है, भूतकाल की किसी दुखदायी घटना का बार-बार चिंतन बंद हो जाता है; अपमान, ग्लानि आदि बातों में भी उसकी स्थिति एकरस रहती है जिससे व्यर्थ जाने वाली संकल्प शक्ति की बचत हो जाती है। इसके अतिरिक्त राजयोग का अभ्यास उसके मन को शक्तिशाली संकल्प देता है जिससे मन का इधर-उधर भटकना बंद हो जाता है, परिणामस्वरूप, एक साधारण व्यक्ति भी असाधारण प्रतिभावान बन जाता है।

❖

अनगिनत खज़ाने

ब्रह्माकुमारी अंजना

बाबा ने दिए सबको खज़ाने एक समान
वंचित रहे न कोई चाहे बच्चा, बूढ़ा या जवान।
संगम पर ही खुलती है, खज़ानों की दुकान
चाहे तो कोई मुट्ठी भर ले, चाहे पूरा मकान।
ज्ञान-धन से बंधनमुक्त हो जाता इंसान
ज्ञान-सूर्य की किरणों से मिट जाता अज्ञान।
दिव्य गुणों की धारणा से मानव बने महान
जीवन-पुष्प खिल जाता, न्यारा कमल समान।
ब्रह्मा बाप का जीवन है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण
योग है एक अद्भुत आध्यात्मिक विज्ञान।
प्राप्त होती शक्तियाँ, शिव से लगाकर ध्यान
मिटते पाप सभी, रहे न कोई नामो-निशान।
फ़रिश्ता बन, भरनी आ जाए ऊँची उड़ान
ज्ञान, योग व सेवा फिर बन जाता दीन-ईमान।
हिला न सके उसको माया का कोई तूफान
अनगिनत दुआयें मिलती, होता जीवन आसान।
न्यारा-प्यारा बन, पाता वो सबका सम्मान
खुशी मिलती इतनी, न की जा सके बयान।
संगम का एक घंटा है एक वर्ष समान
जब धरा पर स्वयं आते भगवान।
आकर देते हैं बिन माँगे अखुट वरदान
रात्रि को अपने कर्मों का करो बाप से मिलान।
उमंग-उल्लास भर जाए, मिट जाए सारी थकान
खिली रहे चेहरे पर सदा मीठी मुस्कान।
नहीं तो धर्मराजपुरी में भरना पड़ेगा लगान
अलविदा कहो माया को, न होना परेशान।
निर्विघ्न बन पाना इनाम, पास कर हर इम्तहान
शीघ्र ही बनेगा, अब भारत देव स्थान।
प्रभु आगमन का कर दो तुम सबको ऐलान
सर्व के सहयोग से करना है, विश्व नव-निर्माण।